पाठ-5

मदनमोहन मालवीय

– जगदीश गोयल

आइए सीखें

■ महान पुरुषों के व्यक्तित्व से परिचय ■ देशभक्ति और कर्त्तव्य परायणता ■ वाक्य प्रयोग ■ सर्वनाम और उसके प्रकार।

महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय को नररत्न और अपने को उनका पुजारी मानते थे। वह कहा करते थे—मैं मालवीय जी से बड़ा देशभक्त किसी को नहीं मानता, मैं सदैव उनकी पूजा करता हूँ।

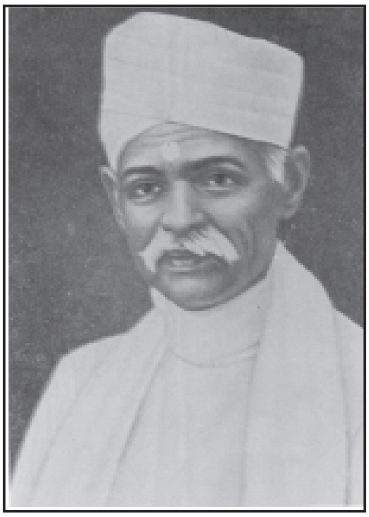

कई लोग मालवीय जी के नाम का बड़ा सुन्दर अर्थ करते हुए कहते थे कि वह मद न, मोह न मालवीय हैं, यानी ऐसा व्यक्ति जिसमें मद और मोह नहीं। सचमुच ही मदनमोहन मालवीय में मद या मोह लेश मात्र भी नहीं था। इसलिए लोग उन्हें 'महामना' कहते थे। एक लेखक ने मदनमोहन के बारे में ठीक ही लिखा है कि प्राचीनता की दृष्टि से यदि उनको भारत का महर्षि कहा जा सकता था तो आधुनिकता की दृष्टि से उनको राजर्षि कहा जा सकता है, पर मदनमोहन मालवीय तो अपने को 'भारत का भिखारी' मानते थे।

मदनमोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 ई. को प्रयाग में हुआ था। उनके पिता का नाम ब्रजनाथ व्यास और माता का नाम मूना देवी था। ये लोग मालवा से आए थे, इसलिए मालवीय कहलाते थे। ब्रजनाथ व्यास राधाकृष्ण के परम भक्त थे। वह बड़े अच्छे कथावाचक थे। मूना देवी बड़े सरल स्वभाव की थीं। पति-पत्नी अपने बच्चों के साथ एक मामूली से कच्चे-पक्के और पुराने मकान में रहते थे। मुहल्ले

शिक्षण संकेत

▶ मालवीय जी की चारित्रिक विशेषताओं को बिन्दुवार लिखें और समझाए ▶ मदनमोहन मालवीय के साथ आजादी की लड़ाई लड़ने वालों की जानकारी दें ▶ चौरी-चौरा कांड विस्तृत रूप से बताएँ ▶ सर्वनाम के प्रकारों को विभिन्न उदाहरणों की चर्चा करते हुए बच्चों की भागीदारी के बीच समझाएँ।

में श्रीधर्म्म ज्ञानोपदेश पाठशाला थी। मदनमोहन मालवीय की आरम्भिक शिक्षा वहीं हुई। पाठशाला में सनातन धर्म की शिक्षा अनिवार्य थी, जिसका बालक मदनमोहन पर बड़ा गहरा और स्थाई प्रभाव पड़ा।

इसके बाद मदनमोहन को एक बड़े स्कूल भेजा गया। स्कूल की फीस ज्यादा नहीं थी, पर उनके माता-पिता वह भी नहीं दे सकते थे। माता के हाथ में सिर्फ़ चाँदी का एक कड़ा था जिसे वह पड़ोस के एक घर में गिरवी रखकर बच्चे की फ़ीस देती थीं। भाग्य की बात देखिए कि जिस बच्चे की पढ़ाई के लिए फ़ीस के लाले पड़े रहते थे उसने आगे चलकर हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे विशाल विद्यालय की स्थापना की, जिसमें हजारों विद्यार्थियों को विद्यादान दिया जाने लगा।

अंग्रेजी की ओर मदनमोहन का झुकाव देखकर पिता ने उन्हें इलाहाबाद जिला स्कूल में भेज दिया। 1879 ई. में इण्टर की परीक्षा पास कर मदनमोहन ने म्योर सेंट्रल कॉलेज में नाम लिखवाया और वहीं से एफ.ए.पास किया। बी.ए. करने के बाद वह गवर्नमेंट हाई स्कूल में, जहाँ उन्होंने शिक्षा पाई थी, केवल 40 रु. महीने पर अध्यापक हो गए।

लगभग 20 वर्ष की आयु में मदनमोहन मालवीय का विवाह पंडित आदित्यराम की कन्या कुन्दन देवी के साथ हो गया।

मदनमोहन मालवीय समाज सेवा का कार्य करते हुए राजनीति की ओर खिंचने लगे। 1885 में वह कांग्रेस में शामिल हो गए। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने सबसे बड़ा काम यह किया कि कुछ सहयोगियों की सहायता से 1909 ई. में प्रयाग से अंग्रेजी का दैनिक पत्र 'लीडर' निकालना शुरू किया साथ ही वे 'हिन्दुस्तान' पत्र का सम्पादन भी करते थे।

कालाकांकर नरेश राजा रामपाल सिंह, मालवीय जी से बहुत स्नेह करते थे। वह उनके गुणों और स्वभाव से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने मालवीय जी को वकालत पढ़ने के लिए मजबूर किया और पढ़ाई के लिए बराबर दो सौ रुपया खर्च देते रहने का वायदा किया पर वे वकालत पढ़ना नहीं चाहते थे, लेकिन इच्छा न रहते हुए भी वह प्रेमभरा अनुरोध न टाल सके। विधि की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने हाई कोर्ट में वकालत शुरू कर दी। वकालत में उन्होंने थोड़े ही वर्षों में अच्छा नाम कमा लिया। वकालत के क्षेत्र में मदनमोहन मालवीय की सबसे बड़ी सफलता चौरी चौरा कांड के अभियुक्तों को फाँसी से बचा लेने की थी। फरवरी 1922 में गोरखपुर जिले के चौरी चौरा नाम के स्थान में एक सनसनीपूर्ण घटना घटी। जनता ने पुलिस थाना जला दिया। मुकदमा चलने पर सेशन जज ने 151 लोगों को फाँसी की सजा दे दी। जब मामला हाईकोर्ट में गया तो पैरवी के लिए मालवीय जी को बुलाया गया, उन्होंने इतनी अच्छी बहस की कि सबके सब अभियुक्तों को साफ बचा लिया।

मदनमोहन मालवीय के जीवन का सबसे बड़ा काम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का था। वह चाहते थे कि देश में कम से कम एक ऐसा विश्वविद्यालय जरूर हो, जिस पर भारतीय संस्कृति की छाप हो। हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना तेजी से आगे बढ़ने लगी। मालवीय जी विश्वविद्यालय के लिए झोली लेकर निकल पड़े और देश के कोने-कोन में घूमने लगे। अंत में 4 फरवरी 1916 को वसन्त पंचमी के दिन हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव रखी। पूरे बीस वर्ष तक यानी 1919 से 1939

तक मालवीय जी विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। इस विश्वविद्यालय ने बड़ी तेजी से उन्नति की और शीघ्र ही इसकी गिनती देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में होने लगी।

राजनीति के क्षेत्र में भी मदनमोहन मालवीय को काफी यश मिला। वह 1909 में लाहौर कांग्रेस के और 1918 में दिल्ली कांग्रेस के प्रधान चुने गए। असहयोग आन्दोलन में वह दो-चार बार जेल गए।

मदनमोहन मालवीय में देश-प्रेम, सच्चाई और त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी थी; उनकी बोली में अजीब मिठास थी। उनकी वाणी बहती गंगा के समान थी, जिससे कितने ही लोगों को प्रेरणा मिली थी। जब वह भाषण देने लगते तो लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। जिन लोगों को उनके साथ काम करने का मौका मिलता था वे उनसे प्रभावित हुए बिना न रहते थे। जैसे साफ कपड़े वह पहनते थे उतना ही साफ और निर्मल उनका मन था। उनकी एक बड़ी खूबी यह थी कि मेहनत तो वह खुद करते थे और जब कीर्ति पाने का समय आता तो दूसरों को सामने कर देते थे। अपनी ख्याति से वह जहाँ तक हो सकता बचने की कोशिश करते थे।

देश को गुलामी की जंजीरों से छुड़ाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया इसके अलावा देश के नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर भी उन्होंने बहुत अधिक ध्यान दिया। वह कहा करते थे कि बच्चे के पहले छह वर्षों में उस पर जो प्रभाव पड़ते हैं वे उसके सारे जीवन को प्रभावित करते हैं। इसलिए वह चाहते थे कि बच्चों के माता-पिता उनकी आरम्भिक शिक्षा की ओर सबसे अधिक ध्यान दें। युवकों की उचित शिक्षा के लिए मदनमोहन मालवीय ने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। विश्वविद्यालय के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था—"सच्चरित्रता हमारे विश्वविद्यालय का मूल मंत्र है और यही शोभा है। हम प्रत्येक छात्र को शुद्ध, सात्विक, तेजस्वी और वीरपुरुष और प्रत्येक कन्या को वीर माता बनाना चाहते हैं जो ईश्वर में विश्वास करे, प्रत्येक प्राणी का आदर करे, वीरता के साथ अन्याय का विरोध करे और आत्मसम्मान के साथ जीविका चलाता हुआ समाज और देश का कल्याण कर सके।"

मालवीय जी का एक बड़ा गुण यह था कि जिस बात को वह ठीक समझते थे उस पर बराबर डटे रहते थे, भले ही कोई उनका साथ दे या न दे। चारों तरफ से विरोध होने पर भी वह अपने विश्वासों पर अटल रहते थे। जब कभी हिन्दू विश्वविद्यालय को धन की कमी पड़ जाती थी, तो वह झोली लेकर निकल पड़ते। उनमें कोई ऐसी विशेषता थी कि जिसके द्वार पर पहुँचते थे, वहाँ से खाली हाथ न लौटते थे।

मालवीय जी ने एक और बड़ा काम यह किया कि उन्होंने हिन्दी को ऊपर उठाया। एक समय था जब अदालतों में हिन्दी में अर्जी देना भी बड़ा कठिन काम था। उन्होंने जी तोड़ कोशिश करके अदालतों में हिन्दी का प्रचार करवाया। जहाँ तक संभव होता वह हिन्दी में ही भाषण देते थे। कई बार अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों के बीच में और विश्वविद्यालय की सभाओं में भी वे हिन्दी में बोलते थे।

इस प्रकार मालवीय जी ने तरह-तरह से देश की सेवा की। अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी वह ऊँचे-से-ऊँचे स्थान पर पहुँचे। उनके राष्ट्र और समाज के सेवा-भाव ने देश की जनता का दिल जीत लिया। उनके निस्वार्थ जीवन की कहानी हमें यह शिक्षा देती है कि हमें दूसरों के लिए जीना और मरना चाहिए।

शब्दार्थ

महात्मा=श्रेष्ठ पुरुष (महान आत्मा)। **नररत्न**=मनुष्यों में श्रेष्ठ। **मोह**=आसक्ति। **सनसनीपूर्ण**=रोमांचक, भय पैदा करने वाली। **अभियुक्त**=जिस पर आरोप लगे हों। **मंत्रमुग्ध**=मोहित हो जाना, वशीभूत हो जाना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**

◆ महामना	-	गोरखपुर
◆ हिन्दू	-	आंदोलन
◆ असहयोग	-	मदनमोहन मालवीय
◆ चौरी-चौरा	-	विश्वविद्यालय

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

- कालाकांकर नरेश ने मालवीय जी को वकालत पढ़ने के लिए....किया। (मज़बूर/उत्साहित)
- चौरी-चौरा नामक स्थान में........ घटना घटी। (सनसनीपूर्ण/उत्तेजक)
- .... पाने का समय आता तो वे दूसरों को सामने कर देते। (कीर्ति/अपकीर्ति)
- विधि की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने .....में वकालत शुरू कर दी। (सुप्रीमकोर्ट/हाईकोर्ट)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—**

(क) मदनमोहन मालवीय जी के नाम का लोग कौन-सा सुंदर अर्थ करते थे?

(ख) वकालत के क्षेत्र में मालवीय जी को सबसे बड़ी सफलता कब मिली?

(ग) मालवीय जी ने किन समाचार पत्रों का संपादन किया था?

(घ) मदनमोहन मालवीय जी ने अपने जीवन में कौन-सा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया?

(ङ) मालवीय जी के नि:स्वार्थ जीवन की कहानी हमें क्या शिक्षा देती है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—**

(क) मदनमोहन मालवीय अपने को भारत का भिखारी क्यों मानते थे?

(ख) 'मालवीय जी की वाणी बहती गंगा के समान थी।' समझाइए।

(ग) चौरी-चौरा काण्ड में मालवीय जी की क्या भूमिका थी?

(घ) मालवीय जी ने हिन्दी की उन्नति के लिए क्या किया?

(ङ) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मालवीय जी ने किन उद्देश्यों के लिए की थी?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

नररत्न, विश्वविद्यालय, स्थापना, व्यक्तित्व, सनसनी, महर्षि, मंत्रमुग्ध, प्रेरणा

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

द्रष्टि, खयाति, कीर्ती, उननति, अनूरोध

पढ़िए और समझिए

मोहन ने **श्याम** से कहा कि **श्याम** के पिता आ गए हैं और **श्याम** को बुला रहे हैं। **श्याम** ने कहा **श्याम** के पिता तो दिल्ली गए हैं। **श्याम** की बहन श्वेता भी **श्याम** के पिता के साथ दिल्ली गई है। शायद **श्याम** के पिता और **श्याम** की बहन दिल्ली से आ गए थे। दोनों **श्याम** का इंतजार कर रहे थे।

ऊपर दिए गए अनुच्छेद में **श्याम** शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है। यह पढ़ने में अटपटा लगता है और भाव समझने में भी कठिनाई आती है। अब इस अनुच्छेद को आप इस तरह पढ़ें—

मोहन ने श्याम से कहा कि **उसके** पिता आ गए हैं और **उसको** बुला रहे हैं। श्याम ने कहा–**उसके** पिता तो दिल्ली गए हैं। **उसकी** बहन श्वेता भी **अपने** पिता के साथ दिल्ली गई है। शायद **उसके** पिता और **उसकी** बहन दिल्ली से आ गए थे। दोनों **उसका** इंतजार कर रहे थे।

ध्यान दीजिए

यहाँ श्याम के स्थान पर उसके, उसको, उसकी, अपने तथा उसका शब्दों का प्रयोग हुआ है। श्याम संज्ञा है और उसके स्थान पर इन शब्दों के प्रयोग करने से भाषा को सरलता से समझा जा सकता है। पहले अनुच्छेद की तुलना में दूसरे अनुच्छेद में स्वाभाविकता झलकती है। इसमें कोई अटपटापन नहीं है, हमें भाव समझने में आसानी हो गई है।

हमने देखा कि पहले अनुच्छेद में संज्ञा शब्दों का प्रयोग किया गया है और दूसरे अनुच्छेद में संज्ञा शब्दों के बदले में अन्य शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये सर्वनाम अर्थात् सबके नाम हो सकते हैं। इनका प्रयोग हम सभी संज्ञा शब्दों के बदले में कर सकते हैं, इसलिए इन्हें सर्वनाम कहते हैं।

और भी जानिए

हिन्दी में कुल 11 सर्वनाम हैं–मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या। प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के छह भेद हैं जो इस प्रकार हैं—

क्र.	सर्वनाम के नाम	उदाहरण	स्पष्टीकरण
1.	पुरुषवाचक सर्वनाम	मैं अंकित हूँ। हम परिश्रमी बालक हैं।	पुरुषवाचक सर्वनाम स्त्री या पुरुष के बदले आते हैं, जैसे-मैं, हम।
2.	निजवाचक सर्वनाम	वह अपने आप आ जाएगा। यह पत्र सचिन ने स्वयं लिखा है	निजवाचक सर्वनाम का रूप 'आप' है, ऐसे सर्वनाम स्वयं या निज का बोध कराते हैं। जैसे-अपने आप, स्वयं।
3.	निश्चयवाचक सर्वनाम	यह कोई नया काम नहीं है। वह आम का पेड़ है।	जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराए, जैसे-यह, वह।
4.	अनिश्चयवाचक सर्वनाम	टेबल पर कुछ रखा है। कोई गा रहा है।	जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो। जैसे-कोई, कुछ।
5.	प्रश्नवाचक सर्वनाम	कौन आता है? तुम क्या खा रहे हो?	प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, जैसे-कौन, क्या।
6.	संबंधवाचक सर्वनाम	वह जो न करे, सो थोड़ा। जिसकी लाठी उसकी भैंस	जो शब्द दो वाक्य खण्डों को जोड़नें का काम करे। वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाए। जैसे-जो, सो, जिसकी, उसकी।

6. नीचे लिखे वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर उनके भेद लिखिए—

क्र.	वाक्य	सर्वनाम शब्द	सर्वनाम भेद
1.	सचिन ने कह दिया कि वह काम नहीं करेगा।	वह	पुरुष वाचक
2.	यह मेरी पुस्तक है।		
3.	जैसी करनी वैसी भरनी।		
4.	तुम क्या खाओगे?		
5.	मैं अपने आप निबंध लिख सकती हूँ।		
6.	पुलिस को शायद मुझ पर संदेह है?		

अब करने की बारी

- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की भाँति अपने प्रदेश में ऐसा कौन-सा विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना किसी व्यक्ति विशेष के प्रयासों से हुई है?
- प्रदेश के विश्वविद्यालयों के नाम शिक्षक की मदद से जानिए।
- हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आप क्या कर सकते हैं? लिखिए।

❑❑